ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 08, अंक : 32, अक्तूबर-दिसंबर 2021

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

संस्मृति अंक

मूल्य : 50 रुपये

विद्यार्थी मंच

उस पार से.....

महादेवी वर्मा
(26 मार्च 1907 - 11 सितंबर 1987

संस्कृति का स्वभाव मूल्यात्मक या धनात्मक ही होने के कारण उसे निषेधात्मक या ऋणात्मक रूप में अनुभव नहीं किया जा सकता। हम किसी भी सांस्कृतिक मूल्य को उसके अभाव में नहीं अनुभव करते। उदाहरण के लिए, हम सामाजिक मूल्य के रूप में सत्य का अनुभव कर सकते हैं, परंतु उसका अभाव, असत्य हमारे अनुभूति क्षेत्र से बाहर बुद्धि का विषय है।

संस्कृति के विकास-क्रम में प्राप्त मूल्य, नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक आदि विविध क्षेत्रों में विभाजित होकर भी व्यक्ति और समष्टि की दृष्टि से एक संलिष्ट और व्यापक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

इन जीवन मूल्यों के साथ अनेक मान्यताओं तथा प्रयोगजनित रूढ़ियों का संक्रमित हो जाना अनिवार्य है। अतः प्रत्येक युग में नवीन परिस्थितियों की कसौटी पर खरे उतरने पर ही वे अपने मूलरूप में प्रतिष्ठित हो पाते हैं।

महादेवी साहित्य समग्र

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-8, अंक- 32, अक्तूबर-दिसंबर 2021

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**

प्रकाशक : **हावड़ा विद्यार्थी मंच**

प्रबंध संपादक : **सुशील कुमार पांडेय**

कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

आकल्पक : **लखनपति झा**

प्रूफ संशोधक : **विनोद यादव**

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

प्रो. दामोदर मिश्र : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय

डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय

डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर

डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल

डॉ. रामप्रवेश रजक : हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनीता लाल, पार्वती शॉ एवं परमजीत पंडित

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229

कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

डॉ. सुनील कुमार 'सुमन': प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन

प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात

प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय

डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)

डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन
सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल
संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070
ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 50 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 500 रुपये, आजीवन-2500 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक-550 रुपये, आजीवन-3000रु.

डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए)अतिरिक्त 30 रुपये।

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

6 संस्तुति

संस्मृति :

7 रामनिहाल गुंजन — आनन्द कुमार सिन्हा : एक संस्मृति

9 डॉ. पंकज साहा — वे आनंद के प्रतिरुप थे

10 रावेल पुष्प — यादों में बसे रहेंगे गीतेश शर्मा और उनके साहित्यिक अड्डे

14 प्रताप सहगल — अजहर की रौशनी दिखायेगी राह

20 पार्वती शॉ — दूसरी अजहर आलम बनूँ

24 सेवाराम त्रिपाठी — ओम भारती : बेचैन रूह और प्यास का सफर

26 डॉ. सुधा उपाध्याय — विनोद दुआ को याद करते हुए

29 इतु सिंह — प्रखर और जीवंत व्यक्तित्व मधुलता गुप्ता

आलेख :

31 डॉ. अमरनाथ — सरकारी सेवाओं में हिंदी

35 डॉ. ऋषिकेश राय — उत्तर संरचनावाद का भाषिक परिप्रेक्ष्य

40 हेमन्त गुप्ता — अज्ञेय का जीवन-बोध और शोध

44 खान मनजीत भावड़िया — लोक साहित्य में नाटक

विमर्श :

47 सविता शर्मा — साहित्यिक विमर्श के कुछ नए सवाल

शोधार्थी की कलम से :

52 रश्मी नरताम — उदास मौसम के खिलाफ

58 डॉ. नीतू रानी — एक टुकड़ा इतिहास (1975) गोपाल उपाध्याय

समय की शिला पर :

61 राज्यवर्द्धन — मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है

कविता :

65 शंभुनाथ — पाँच कविताएँ

68 मृत्युंजय — पाँच कविताएँ

72 विमल किशोर — रोटी : तीन कविताएँ

74 अभय शुक्ला — गजल

कहानी :

77 सिद्धेश — धब्बे और सेमिनार

79 सरिता खोवाला — त्रिशूल का रक्षक

82 हंसा दीप — कूच

लघुकथा :

87 संजय रॉय — ख़ज़ाना (लघुकथा)

88 पवन शर्मा — गरम हवा

व्यंग्य :

89 मदन गुप्ता सपाटू — दास्तान-ए-सर्टिफिकेट

समीक्षा :

91 अवधेश कुमार सिन्हा — कुछ दर्द मिटाने बाकी हैं / कुछ फ़र्ज़ निभाने बाकी हैं

97 डॉ. कमल कुमार — जागरुक अकेलेपन का जीवंत दस्तावेज- 'तुम नहीं थे'

100 डॉ. वन्दना गुप्ता — विविध आएमों की कवयित्री : डॉ मनीषा झा

104 डा. पंकज साहा — शतवर्ष में रेणु

संचार :

109 देवेश पाण्डेय, डॉ. अजय कुमार सिंह, सोनिया बत्रा — अंतरराष्ट्रीय मीडिया में कोविद -19 महामारी की रिपोर्टिंग

अभिमत :

118 डॉ. प्रेम जनमेजय, बुलाकी शर्मा, माँगन मिश्र 'मार्त्तंड', श्रवण कुमार उर्मलिया, डॉ. वीरेन्द्र परमार, डॉ. प्रतिमा प्रसाद — प्रतिक्रियाएँ (व्यंग्य-विशेषांक)

गतिविधियाँ :

121 पार्वती रघुनंदन — विद्यार्थी मंच

122 मधु सिंह — हिंदी मेला

शोध समीक्षण सृजन संचार

संस्तुति

इस बार मुक्तांचल परिवार के शीर्ष सदस्य प्रकाशक आनन्द कुमार सिन्हा नहीं रहे हैं। विगत 6 नवम्बर, 2021 को उनका दिवंगत होना हम सभी को गहरे अवसाद में छोड़ गया है। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि उनके 'मिशन' को जारी रखने में हैं।

अस्तु, हम 'मुक्तांचल' द्वारा चलाए जाने वाले अभियान को कभी रुकने न देने का संकल्प लेते हैं।

इस अंक में विशेष रूप से संस्मृतियों को शामिल किया गया है, विगत दो वर्ष का समय महामारी के भयंकर चपेट में अपने तमाम प्रियजनों के खोने का रुदन लिए हुए जैसे सहम कर काठ हो गया है। स्मृतियों को कुरेदने पर जीवित क्षणों की जीवंतता कम से कम वर्तमान के अवसाद को अतीत की हरियाली का लेप देती है, और सर्जनात्मकता स्वतः मुखर हो उठती है। अतीत हुए व्यक्तित्व को संस्मृति की झिलमिल रोशनी से उजागर करने पर प्रेरणा के विपुल स्रोत मिल जाते हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी सकारात्मक पथ का अनुमोदन करते हैं। मुक्तांचल के अगले अंकों में भी संस्मृति लेखन एक स्थायी स्तंभ के रूप में जारी रहेगा। सुधी कलमकारों से अनुरोध है कि वे समय के गर्द-गुबार से जूझने वाले सर्जनात्मक संकल्प से युक्त व्यक्तित्वों के संस्मरण अवश्य भेजें।

'मुक्तांचल' के प्रकाशन की यात्रा आपात काल में 'अभिव्यंजना' के प्रकाशन से शुरु हुई। अभिव्यंजना का प्रथम अंक अप्रैल 1976 में प्रकाशित हुआ, उन दिनों अभिव्यक्ति की आजादी आपात-काल की मुट्ठी में बंद थी, तमाम लघुपत्रिकाएँ जो नागरिक स्वतंत्रता और मानव अधिकारों की पैरोकार थीं जोखिम के दौर से गुजर रहीं थीं, जब अक्षर-अक्षर इबारतों पर काली लकीरें फेर दी जाती थीं तभी 'अभिव्यंजना' के मंच से 'जनसाहित्य सम्मेलन' की तैयारी कर ली गई और जनवरी 1977 में अखिल भारतीय स्तर पर सैंकड़ों लेखकों ने मिलकर चार दिन व्यापी सम्मेलन कर काले कानूनों का विरोध किया, 'अभिव्यंजना' के तीसरे अंक में इस सम्मेलन की संपूर्ण रपट प्रकाशित की गई थी। 1978-79 में 'मुक्तांचल' के कुछ अंक निकले, उस समय तक प्रायः राजबंदियों की मुक्ति हो चुकी थी एवं 'प्रेस सेंसरशिप' के काले कानून को निरस्त कर दिया गया था। हम अपनी नई लड़ाई में कहीं जुड़ और बिखर रहे थे... एक लंबा अंतराल और फिर से 2014 में 'अभिव्यंजना' के दो अंक और 'मुक्तांचल' के अब तक के अंकों का सिलसिला जारी है। इस बार जब बराबरी की लड़ाई के एक योद्धा आनन्द सिन्हा हम सबसे दूर चले गए हैं, हमें उनकी राह को और भी मजबूती से सशक्त करना है।

आर सिन्हा

संपादक